International Journal of Academic Research
P-ISSN: 2348-7666: Impact Factor: 7.215
Homepage: https://www.ijar.org.in/
Volume-13, Issue-2(2), Apr-Jun-2026
This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License [CC BY 4.0]

आत्मनिर्भर भारत : नारी का योगदान

डॉ.बलगा सुभा
हिन्दी प्राध्यापिका, सरकारी महाविद्यालय विजयनगरम टाऊन, विजयनगरम

"आत्मनिर्भरता "अर्थात अपने भरोसे पर रहना। पंडित बालकृष्ण भट्ट कहते हैं- "शारीरिक बल, चतुरंगिनी सेना का बल, प्रभुता का बल, ऊँचे कुल में पैदा होने का बल, मित्रता का बल, मंत्र-तंत्र का बल इत्यादि जितने बल हैं, निजबाहु बल के आगे क्षीण बल हैं। आत्मनिर्भरता की बुनियाद वह बाहुबल जो, सब तरह के बलों का सहारा देनेवाला है और उभारने वाला है।" प्राचीन काल से भारत एक आत्मनिर्भर देश है। विदेशी आक्रमण, स्वार्थ लोलुपता, नीच प्रकृति आदि के कारण भारत के लोग अपने भरोसे पर रहना भूल गये हैं। आत्म निर्भर भारत आज भारत देश का सपना है। आत्मनिर्भर भारत का अर्थ है-स्वदेशी को अपनाना और देश को सशक्त बनाना। इसके लिए आवश्यक कई योजनाएँ भारत सरकार ने बनाया। सृष्टि में आधा माननेवाली नारी आत्मनिर्भर भारत का आवश्यक अंग है। क्योंकि किसी देश, जाति, समाज या परिवार की सफलता वहा ँ ं स्थित सशक्त नारी पर निर्भर रहता है। वेदकाल से लेकर आज की कृतिम होशियारी (Artificial Intelligence) तक नारी की सहभागिता प्रशंसनीय रहा। समाज, संस्कृति, शिक्षा, अर्थव्यवस्था और राष्ट्र निर्माण में भी भारतीय महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाया।

भारत देश में नारी को समाज और परिवार में आधा भाग मानकर सम्मान देते ते हैं। उदा- शिव को अर्धनारीश्वर के रूप में पूजा करते हैं। गाँवों का देश माननेवाला भारत का हर एक गाँव की सुरक्षा करनेवाली स्त्री मूर्ति की पूजा ग्राम देवता के रूप में बती है। शक्तिशाली के रूप में नारी की वंदना की जाती है। शक्तिशाली के रूप धारी की वंदना की जाती है।सिर्फ भारत में ही नारी का नाम पुरुष के नाम के पहले रखकर बुलाते हैं जैसे- पार्वती-परमेश्वर, सीताराम, लक्ष्मीनारायण आदि। भारतीय इतिहास इसका प्रमाण है। राहुल सांकृत्यायन अपनी प्रमुख रचना 'ओल्गा से गंगा तक' में सभ्यता के विकास में परिवर्तित नारी जीवन का चित्रण परिवर्तित सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य के अनुरुप किया है।नारी का आत्मनिर्भर रूप को दर्शाया है। नारी सिर्फ प्रेमिका नहीं है,वह एक आदर्श माता एवं योद्धा, नेता एवं विचार शील आत्म निर्भर भी है।

वेदकाल में नारी का योगदान:

भारतीय इतिहास के आरंभ से ही नारी का योगदान अत्यंत प्रशंसनीय रहा। वेदकाल से ही नारी शिक्षा, धर्म, संपत्ति एवं ज्ञान के क्षेत्र में उत्तम स्थान पर था।वे अत्यंत शिक्षित ही नहीं, सभाओं में पुरुषों के साथ भाग लेती थी। वेदोच्छारण करना, धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेना भी करती थी। वेदकालीन समाज में पर्दा प्रथा और सती प्रथा नहीं था। वेदकालीन नारी के प्रति सम्मान था ।वे साक्षर एवं ज्ञानी भी थे। जीवनभर वेदों का अध्ययन करनेवालों को "ब्रह्मवादिनी" कहते हैं और विवाह तक वेदों का अध्ययन करनेवालों को "सद्योवधू"कहते हैं। ऋग्वेद के मंत्रों की रचना करनेवालों को "ऋषिका" नाम से संबोधित करते हैं। गार्गी, मैत्रेयी, घोषा, लोपामुद्रा, अपाला, विश्ववारा, "वाक्-अम्भूणी "आदि ऋविकाओं ने तत्कालीन सामाजिक विकास में प्रशंसनीय योगदान दिया।लोकतांत्रिक संस्थाएँ जैसी सभा, समितियों में पुरुषों के समान भाग लेकर राजनैतिक विमर्श करती थीं। स्त्रियों को अपना जीवन साथु को चुनने की स्वतंत्रता है। विवाह की आयु भी अधिक थी। उनको घर की स्वामिनी और अर्धांगिनी मानकर सम्मान करते थे। उत्तर वैदिक काल में परिवर्तन आ गया है। उनके अधिकार कम हो गये। लड़की का जन्म होने ही दुख का अनुभव करते थे। विवाह की आयु कम हो गयी और पर्दाप्रथा का आरंभ हुआ। विवाह की कुरीतियों का आरंभ हुआ।

मध्य काल में नारी का योगदान :

मध्यकाल में नारी को अनेक प्रकार के चुनौतियों का सामना करना पड़ा।फलत : वह अपनी शक्ति एवं साहस का परिचय दिया। रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध करके अपनी नारी शक्ति का परिचय दिया। मीरा बाई ने भक्ति आंदोलन के माध्यम से

समाज को एक नई दिशा प्रदान किया।इतना ही नहीं धर्म और संस्कृति को सजीव रखने में मध्यकालीन नारी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वतंत्रता संग्राम में नारी का योगदान :

अंग्रेजी शासन से त्रस्त भारत स्वतंत्रता के लिए लडाई करना आरंभ किया। असहयोग आंदोलन में की महिलाओं ने भाग लिया।1857 के प्रथम भारतीय संग्राम की प्रथम वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई ने अपना राज्य झांसी को अंग्रेजों के कब्जे से बचाया।वह बचपन से ही युद्ध कला एवं घुड़सवारी में निपुण थीं।

सरोजिनी नायडू जी ने महात्मा गांधी जी से आयोजित नमक सत्याग्रह में सफल भूमिका निभाई ।वह स्वतंत्र भारत के संयुक्त प्रांत उत्तर प्रदेश की पहली राज्यपाल पद पर नियुक्त सफल महिला अधिकारी है ।वह राजनीतिक कार्यकर्ता ही नहीं प्रसिद्ध कवयित्री भी है। उनकी कविताओं में देश भक्ति, प्रेम और त्रासदी का सुंदर चित्रण दिखाई पड़ती है। भारत सरकार ने "भारत कोकिला" उपाधि से उन्हें सम्मानित किया। महात्मागांधी जी की धर्मपत्नी कस्तूरबा गांधी निडर स्वतंत्र सेनानी भी थे। उन्होंने भारत के स्वतंत्रा संग्राम में चंपारण सत्याग्रह में और भारत छोडो आंदोलन का सफल नेतृत्व किया। साथ ही स्त्री शिक्षा , स्वच्छता एवं अहिंसक सुधार करने में सफल योगदान दिया। एनी बीसेंट स्वतंत्रता संग्राम की अग्रणी नेत्री मानी जाती है। बाल गंगाधर तिलक जी के साथ मिलकर भारत में स्वशासन मांग करने होमरुल लीग की स्थापना की। उन्होंने थियोसाफिकल सोसाइटी से जुड़कर भारतीय संस्कृति, धर्म और दर्शन को पुनरुत्थान करने में सफल योगदान दिया। है। सभी महिलाओं का योगदान आत्मनिर्भर भारत के लिए आवश्यक एवं आचरणीय है।

स्वतंत्रता के बाद नारी का योगदान :

स्वतंत्र भारत में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनान के लिए शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, खेल आदि सभी क्षेत्रों में सक्षम बनाना है। सावित्री बाई फूले ने स्त्रीशिक्षा का प्रोत्साहन दिया। समकालीन चुनौतियों का सामना करते हुए मेरी क्यूरी ने रेडियो धार्मिकता पर काम करके दो अलग-अलग विज्ञान क्षेत्रों में नोबुल पुरस्कार प्राप्त किया। कल्पना चावला ने अंतरिक्ष विज्ञान में काम करके पुरुषों के साथ मिलकर अंतरिक्ष में कदम रखनेवाली प्रथम महिला के रूप में सुप्रसिद्ध है। इतना ही नहीं खेल के क्षेत्र में भी भारतीय महिलाओं का योगदान प्रशंसनीय रहा। सामाजिक बंधनों को तोडकर मैरी कॉम बौक्सिंग (मुक्केबाजी) में, करणम मल्लेश्वरी ओलंपिक में पदक प्राप्त किये थे। वे कामीण भारत से जुड़े हुए थे, फिर भी देश का नाम रोशन करने में सफल योगदान दिया।पी.वी.सिन्धूने बैडमिंटन में सानि मिर्जा ने टेनिस में अंतरराष्ट्रीय मंच पर पदक जीतकर आत्मनिर्भरता का मिसाल पेश किया है। क्रिकेट जो सिर्फ पुरुषों का खेल माना जाता है, इसमें भी महिलाओं ने अपनी कुशलता एवं दृढ़ता के साथ अंतराष्ट्रीय स्तर पर विजेता बनकर एक नई पहचान प्राप्त किया है।मिथाली राज ने दोहरा शतक लगाने वाली पहली भारतीय महिला क्रिकेटर है। स्मृति मंथाना महिला प्रीमियर लीग में सफलता प्राप्त करके भारतीय महिला की आत्मनिर्भरता का परिचय दिया।

प्राचीनकाल से लेकर आज तक महिलाएँहर क्षेत्र में अपनी क्षमता का परिचय दे रहे हैं। शिक्षा, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, कृषि, डिजिटल आदि में भारतीय महिलाएँ सफल योगदान प्रस्तुत कर रहे हैं। 'स्वयं सहायता समूह' के माध्यम से ग्रामीण महिलाएँ आर्थिक रूप से सशक्त बन हैं। हवाई जहाज चलाने वाली, वंदेभारत ' रेल गाडी के इंजन चालक के रुप में काम करनेवाली महिलाओं की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में नारी आधार स्तंभ हैं। शिक्षित नारी, आत्मनिर्भर एवं होने से ही देश का संपूर्ण विकास होता है। साथ ही वह देश भी आत्म निर्भर बन सकता है।कबीर दास ने भारतीय नारी की प्रशंसा करते हुए कहते हैं -

"नारी निंदा न करो,नारी रत्न की खान।
नारी से नर होता है,धृव प्रहलाद समान।"